

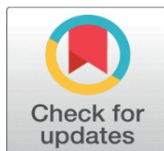
LOW ACADEMIC PERFORMANCE: CONTEXT AND CHALLENGES

निम्न अकादमिक प्रदर्शन: सन्दर्भ और चुनौतियां

Sunil Kumar ¹ , Alok Kumar ² 

¹ Assistant Professor, Faculty of Education, University of Delhi, Delhi 110007, India

² Ph.D. Researcher, Faculty of Education, University of Delhi, Delhi 110007, India



ABSTRACT

English: This research paper is written on the low academic performance in the school of students studying in the middle stage. Efforts are being made to improve the academic performance of the children through various programs at the school level, yet the low academic performance of the students remains a challenge for parents and teachers. At present this issue needs to be understood with great sensitivity. Through this research paper the authors have studied the low performing students and their teachers at the school level and by analyzing the references of all the partners discuss the causes and effective solutions related to this issue. This research paper can help the policy makers, teachers and researchers working in this field to better understand the concerns of low academic performance and find the necessary solutions. The main results of the research found that the poor financial status of the students' families, active participation of children in household chores, lack of awareness of punishment and punishment by parents, family tension, and drug habits etc. are the causes of low academic performance. Other reasons for low academic performance include lack of concentration in the classroom, lack of interest in learning and lack of coordination with teachers.

Hindi: यह शोधपत्र मिडिल स्टेज में पढ़ रहे छात्रों के विद्यालय में निम्न अकादमिक प्रदर्शन पर लिखा गया है। विद्यालयी स्तर पर कई तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन को बेहतर करने के प्रयास चलते आ रहे हैं फिर भी छात्रों का निम्न अकादमिक प्रदर्शन अविभावकों और शिक्षकों के सामने एक चुनौती के रूप में विद्यमान है। वर्तमान में इस मुद्दे को बड़ी संवेदनशीलता के साथ समझने की आवश्यकता है। इस शोध पत्र के माध्यम से लेखकों ने विद्यालयी स्तर पर निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों एवं उनके शिक्षकों पर अध्ययन किया है और सभी भागीदारों के सन्दर्भों का विश्लेषण करके इस मुद्दे से जुड़े कारणों और निपटान के कारगर उपायों पर चर्चा की है। ये शोध पत्र नीति निर्धारकों, शिक्षकों और इस क्षेत्र में कार्यरत रहे शोधार्थियों के लिए निम्न अकादमिक प्रदर्शन के सरोकारों के बेहतर तरीके से समझने और आवश्यक समाधान निकालने में मदद कर सकता है। शोध के मुख्य परिणामों में निम्न अकादमिक प्रदर्शन के कारणों में छात्रों के परिवारों की खराब आर्थिक स्थिति, घर के कामों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी, अविभावकों की शिक्षा और शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी, पारिवारिक तनाव, और नशे की आदतें इत्यादि पाया गया है। निम्न अकादमिक प्रदर्शन के अन्य कारणों में कक्षा में ध्यान की कमी, पढ़ाई में रुचि का अभाव और शिक्षकों के साथ समन्वय की कमी भी सम्मिलित हैं।

Keywords: Low Academic Performance, Educational Challenges, Educational Context, निम्न अकादमिक प्रदर्शन, शैक्षिक चुनौतियां, शैक्षिक सन्दर्भ

Corresponding Author

Sunil Kumar, skumar1@cie.du.ac.in

DOI

[10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5698](https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5698)

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



1. प्रस्तावना

विद्यालयी शिक्षा में छात्रों का निम्न अकादमिक प्रदर्शन एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले छात्र अपने अन्य सहपाठियों के समान प्रदर्शन करने के लिए संघर्ष तो करते हैं, लेकिन फिर भी वे अक्सर अपनी पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं। निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनकी सीखने की क्षमता में बाधा डालती हैं, इसके कई कारण हो सकते हैं जिसमें हितधारकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी, घर पर संसाधनों की कमी, तकनीक तक पहुँच की कमी और साथियों और परिवार का समर्थन तथा परेशान कर देने वाली दैनिक दिनचर्या आदि कई अन्य कारण सम्मिलित किये जा सकते हैं। मुख्यतः ये भी संभव है कि निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले

छात्रों के लिए शिक्षा और कार्यबल के अवसरों की कमी हो। आज के समय में समाज व परिवार के लोग लगभग हर छात्र से उच्च उपलब्धि की उम्मीद करते हैं। जो छात्रों के मनोसामाजिक स्थिति को भी प्रभावित करती है। अकादमिक उपलब्धि किसी व्यक्ति की वास्तविक क्षमता और योग्यता निर्धारित करते समय उपयोग की जाने वाली संभवतः सबसे महत्वपूर्ण कसौटी है। इसके साथ-साथ यह एक छात्र के भविष्य का पूर्वानुमान लगाने वाली भी बन गई है। इसके परिणामस्वरूप यह बच्चों और उनके माता-पिता दोनों पर बहुत अधिक मानसिक दबाव डाल रही है (मीना और सिवाच, 2008)। वर्तमान में अकादमिक प्रदर्शन मानव विकास का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है जो स्कूल प्रक्रिया के केंद्र में है। शिक्षा व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायता करती है (तनिमा और नंदिता, 2004)। अकादमिक सफलता संज्ञानात्मक और गैर-संज्ञानात्मक व्यक्तित्व लक्षणों का एक उत्पाद है और व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और अन्य पर्यावरणीय कारकों सहित कई तत्वों का परिणाम है। शिक्षा सभी क्षेत्रों और पहलुओं में एक व्यक्ति के पूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायता करती है। दूसरी ओर, यह उसे बौद्धिक, शिक्षित, साहसी और अच्छे चरित्र के साथ शक्तिशाली बनाकर सामान्य रूप से समाज और देश के विकास में योगदान देती है। नैतिक सिद्धांत, आध्यात्मिक सिद्धांत, राष्ट्रीय आकांक्षाएं और सांस्कृतिक विरासत केवल शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाई जा सकती हैं।

अकादमिक प्रदर्शन का सीधा संबंध कक्षा में शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के दौरान छात्र की प्रगति और ज्ञान के विकास से होता है। छात्रों की अकादमिक उपलब्धि विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, जिसमें छात्र की रुचि और उनके द्वारा पढ़े जा रहे विषयों के प्रति दृष्टिकोण, योग्यता और बुद्धिमत्ता, उपलब्धि के लिए इच्छा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, माता-पिता की भागीदारी, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालय का माहौल आदि शामिल हैं। वर्तमान में इस निम्न अकादमिक प्रदर्शन के मुद्दे को समझना और इसके सन्दर्भों के तह तक जाना अति महत्वपूर्ण है, तभी हम उनके बेहतर प्रदर्शन के लिए सही मार्गदर्शन और कार्यनीतियों पर काम कर सकते हैं। सही मार्ग दर्शन और कारगर कार्यनीतियों के माध्यम से ही निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सिखाने वाली गतिविधियों में सहयोग करने के तौर तरीकों को खोजा जा सकता है।

विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में अकादमिक प्रदर्शन की स्थिति का अवलोकन: भारत के सन्दर्भ में निम्न उपलब्धि वाले छात्रों के लिए नीतियाँ और कार्यक्रम

छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन 1960 के दशक से ही शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं का मुख्य ध्यान रहा है, क्योंकि यह दशक भारत में संपूर्ण शैक्षणिक प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण है। अकादमिक उपलब्धि सीधे तौर पर किसी राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास और शैक्षणिक संस्थानों के प्रदर्शन को प्रभावित करती है (सिंह, मलिक, और सिंह, 2016)। ज्ञान का हस्तांतरण और संज्ञानात्मक क्षमता में सुधार हर शैक्षिक स्तर पर महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक शिक्षा छात्र के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चरण है, क्योंकि यह प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा में स्थानांतरण का प्रतीक है। अकादमिक प्रदर्शन कई कारकों से प्रभावित होता है, जिसमें बौद्धिक क्षमता, व्यक्तित्व, प्रेरणा, कौशल, रुचियाँ, अध्ययन की आदतें, आत्म-सम्मान और शिक्षक-छात्र संबंध और उनके मध्य संवाद शामिल हैं। न्यूनतम अपेक्षित से कम अकादमिक प्रदर्शन सबसे खराब माना जाता है। सर्व शिक्षा अभियान (2001) का मुख्य उद्देश्य सभी बच्चों को उनकी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के बावजूद गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना था। सर्व शिक्षा अभियान में भी कक्षा प्रथम से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण का प्रावधान किया गया था अब भी कई सरकारी विद्यालय अकादमिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए उपचारात्मक शिक्षण कार्यक्रम भी प्रदान करते हैं। समग्र शिक्षा अभियान (2018) में छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन से संबंधित कुछ प्रमुख लक्ष्य जिनमें: सभी स्तरों पर छात्रों के सीखने के स्तर में सुधार, सीखने के परिणामों की उपलब्धि में अंतर को कम करने के लिए लर्निंग एन्हांसमेंट/एनरिचमेंट प्रोग्राम (एलईपी) प्रदान करना और सीखने के परिणामों की उपलब्धि में अंतर का आकलन करने के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सीखने के स्तर का आकलन करना। समग्र शिक्षा अभियान (एसएसए) छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और उपलब्धि को बेहतर बनाने के लिए व्यापक उपाय प्रदान करता है। छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन से संबंधित कुछ प्रमुख प्रावधान हैं जिनमें लर्निंग एन्हांसमेंट प्रोग्राम (एलईपी) विशेष जरूरतों वाले बच्चों (सीडबल्यूएसएन) सहित कमजोर छात्रों के लिए समर्थन के साथ सीखने के परिणामों में अंतराल को पाटने पर केंद्रित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी. 2020) यह आश्वासन देती है कि सीखने के परिणामों के लिए उपलब्धि अंतर को कम करने के लिए कक्षा की सेटिंग में योग्यता-आधारित शिक्षण अधिक महत्वपूर्ण है। इस नीति ने शिक्षा मंत्रालय के तहत एक मानक-निर्धारण निकाय के रूप में राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र, परख स्थापित करने का भी सुझाव दिया है, जिसे भारत में सभी मान्यता प्राप्त स्कूल बोर्डों के लिए छात्र मूल्यांकन और मूल्यांकन के लिए मानदंड, मानक और दिशानिर्देश निर्धारित करने, राज्य उपलब्धि सर्वेक्षण (एस.ए.एस.) को निर्देशित करने और राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) करने और शैक्षिक लक्ष्यों की उपलब्धि की निगरानी करने के मूलभूत लक्ष्यों को पूरा करने का दायित्व दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शैक्षिक प्रणाली में प्रत्येक हितधारक और भागीदार अपनी जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी, समर्पण और नैतिकता के साथ पूरा करने के लिए वचनबद्ध है। निपुण भारत मिशन (2022) समझ के साथ पढ़ने और अंकगणित में दक्षता के लिए राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत) का लक्ष्य देश का हर बच्चा 2026-27 तक ग्रेड 3 के अंत तक बुनियादी साक्षरता और अंकगणित हासिल करना सुनिश्चित करना है। यह सीखने के परिणामों को प्राप्त करने, शिक्षक क्षमता निर्माण; उच्च गुणवत्ता वाले और विविध छात्र और शिक्षक संसाधनों/शिक्षण सामग्री के विकास में प्रत्येक बच्चे की प्रगति को भी ट्रैक भी करता है।

इसके अलावा मध्याह्न भोजन योजना एक सरकारी कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में छात्रों की नियमित उपस्थिति को प्रोत्साहित करने और उनके अकादमिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए मुफ्त पौष्टिक भोजन प्रदान करना है। यह योजना निम्न आय वर्ग से सम्बंधित छात्रों के लिए वरदान साबित हुई है और इस योजना से छात्रों के उपस्थिति और नामांकन बढ़ा है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) का उद्देश्य पूरे वर्ष में छात्र की सीखने की प्रक्रिया का सतत और समग्र मूल्यांकन करना है। सीसीई मूल्यांकन के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है, जहाँ छात्र के समग्र प्रदर्शन का मूल्यांकन विभिन्न मापदंडों के आधार पर किया जाता है, न कि केवल अकादमिक उपलब्धि के आधार पर। राष्ट्रीय उपलब्धि

सर्वेक्षण एक व्यापक राष्ट्रीय मूल्यांकन की प्रक्रिया है जो कक्षा तीन, आठ तथा दसवीं तक के छात्रों की शैक्षणिक प्रगति का आकलन करने के लिए भारत के सभी जिलों में किया जाता है। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य छात्रों की अकादमिक उपलब्धि और देश में शिक्षा की स्थिति के बारे में विश्वसनीय और निष्पक्ष आँकड़े प्रदान करना है। असर (एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट) एक वार्षिक शिक्षा मूल्यांकन का अध्ययन है, जो ग्रामीण भारत में छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर केंद्रित है। असर रिपोर्ट बच्चों के सीखने के स्तर पर विस्तृत जानकारी प्रदान करती है, जिसमें उनकी पढ़ने और बुनियादी अंकगणित करने की क्षमता भी शामिल है। रिपोर्ट ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की स्थिति, जैसे नामांकन, उपस्थिति, बुनियादी ढांचे और शिक्षक प्रशिक्षण के बारे में भी जानकारी प्रदान करती है।

इस अध्ययन के लिए कई सम्बन्धित शोध अध्ययनों की आलोचनात्मक समीक्षा की गयी गयी है, जो छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन से संबंधित हैं। अहमद और वायस (2012) ने अपने शोध कार्य में अकादमिक उपलब्धि के निम्न स्तर के कारणों में मोबाइल फोन का प्रसार, मौज-मस्ती, सीखने के प्रति छात्रों की निम्न प्रेरणा और ध्यान की कमजोरी को पाया। तामिमी (2012) ने अपने अध्ययन में बताया कि निम्न अकादमिक प्रदर्शन की समस्या एक वैश्विक समस्या बन गई है। शोधकर्ताओं ने निम्न अकादमिक उपलब्धि के लिए जिम्मेदार कारकों में सामाजिक कारक, आर्थिक कारक और राजनीतिक परिस्थितियाँ को पाया। बाला (2014) ने अपने अध्ययन में पाया कि निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वालों को विद्यालय में समायोजन की समस्या होती है। अल-ज़ौबी और यूनेस (2015) का अध्ययन छात्रों के निम्न अकादमिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कई कारकों में कक्षा में पुरानी शिक्षण तकनीकों का उपयोग। साथ ही, शिक्षकों और छात्रों के बीच सम्मान की कमी को बताया है। अहमद और अब्दुल (2015) के अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों को अपनी सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए वैकल्पिक शिक्षण सामग्री के रूप में एक विशिष्ट कंप्यूटर-आधारित शिक्षण सहायता की आवश्यकता होती है। माइकल और वुमी (2016) अपने शोध में ये सुझाव देते हैं कि शिक्षकों को छात्रों की बेहतर समझ और प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान और प्रासंगिक शिक्षण सामग्री का उपयोग करना चाहिए; शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण तकनीकों का उपयोग करना चाहिए; और निर्देश सरल से जटिल की ओर बढ़ना चाहिए, माता-पिता को भी अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देना चाहिए और उचित निगरानी करनी चाहिए। काहुनजिरे व अन्य (2023) ने अपने अध्ययन में पाया गया कि अत्यधिक सक्रिय परिवार के सदस्यों वाले छात्रों ने उन छात्रों से काफी बेहतर प्रदर्शन किया जिनके परिवार के सदस्य शामिल नहीं थे। इसके अतिरिक्त, माता-पिता की भागीदारी और विद्यालय में बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध देखा। प्राथमिक बाधाएँ जिनमें कुछ माता-पिता की निम्न आय और विद्यालयी शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण थीं। मुल्यादी, वासपाडा, और केनकाना (2023) द्वारा किये गए अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि छात्रों का निम्न अकादमिक प्रदर्शन मुख्य रूप से शिक्षण कौशल की गुणवत्ता, स्कूल के समर्थन और वहाँ के वातावरण पर निर्भर करता है। साथ में उनके माता-पिता की अपने बच्चों के प्रति धारणा, विश्वास, उनके सामाजिक और स्कूल के माहौल की प्रकृति पर भी निर्भर करता है।

2. शोध पत्र की आवश्यकता और महत्व

शिक्षा को जीवन की आवश्यकता के रूप में देखा जाता है और यह छात्रों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। निम्न अकादमिक प्रदर्शन का छात्रों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिसमें भविष्य की आकांक्षा, लक्ष्य की खोज, विद्यालय की सफलता और करियर शामिल हैं। प्रमुख मुद्दा यह है कि आधुनिक शैक्षणिक संस्थानों को छात्रों के निम्न अकादमिक प्रदर्शन से निपटना पड़ता है, जो उन्हें अपने शैक्षिक लक्ष्य को प्रभावी ढंग से पूरा करने से रोकता है। यह शोध पत्र स्कूल प्रणाली को निम्न प्रदर्शन वाले छात्रों की चिंताओं की समझ विकसित करके कारगर उपाय सुझाने में सहायक हो सकता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य माता-पिता, शिक्षकों और स्कूल प्रशासन में निम्न प्रदर्शन वाले छात्रों की शैक्षणिक चुनौतियों और संबंधित पर्यावरणीय कारकों के सन्दर्भों की गहरी समझ विकसित करना और स्थाई समाधान तक पहुंचाना है।

3. शोध उद्देश्य

- 1) निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले छात्रों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक चुनौतियों का पता लगाना।
- 2) निम्न अकादमिक प्रदर्शन के बारे में निम्नलिखित सन्दर्भों के आधार पर छात्रों और अध्यापकों के विचारों का अध्ययन करना:
 - निर्देशों की भाषा
 - उपस्थिति का अंतर
 - कक्षा में भागीदारी
 - घर पर अध्ययन सहायता प्रणाली
 - प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया और शिक्षण संसाधनों की पहुँच।

इस शोध पत्र में कम अकादमिक प्रदर्शन को एक ऐसी परिस्थिति माना गया है जिसमें एक छात्र लगातार अपने शैक्षणिक प्रयासों में औसत दर्जे से नीचे का प्रदर्शन करता है अर्थात् स्कूल या समग्र रूप से शैक्षिक व्यवस्था द्वारा स्थापित लक्ष्यों या मानदंडों को पूरा नहीं कर पा रहा हो। संदर्भ शब्द

से तात्पर्य कक्षा का वातावरण, शिक्षण विधियाँ, घरेलू वातावरण और छात्रों की आवश्यकताएँ हैं जो छात्रों के शैक्षिक अनुभव को आकार देती हैं, जिससे एक ऐसा गतिशील माहौल बनता है जहाँ दोनों पक्ष विकास और प्रगति में योगदान देते हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक और संस्थागत कारक भी इसमें शामिल हैं। शोध पत्र में चुनौतियों का अर्थ शैक्षिक और वातावरणीय कठिनाइयों को माना गया है, जो किसी बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन पर हावी होती हैं और असुविधा का कारण बनती हैं। ऐसे विषय या मुद्दे हैं जो प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, जिन पर ध्यान, विचार या कार्रवाई की करने की आवश्यकता रहती है।

4. अनुसन्धान विधि: इस शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श : इस शोध पत्र की जनसँख्या में निम्न अकादमिक प्रदर्शन वाले मिडिल स्टेज (छठी से आठवीं) में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थी और शिक्षक शामिल हैं जो सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जनसंख्या आकार को ध्यान में रखते हुए, नमूने के चयन के लिए व्यवस्थित यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया। वर्तमान अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश के जिला रायबरेली के दो शैक्षिक ब्लॉकों में से प्रत्येक शैक्षिक ब्लॉक के 5 स्कूलों में से माध्यमिक स्तर (छठी से आठवीं) के 35 कम प्रदर्शन करने वाले छात्रों को चुना गया, इस प्रकार दोनों शिक्षा खण्डों में से कुल 10 विद्यालय में से 70 विद्यार्थियों को व्यवस्थित यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक द्वारा चुना गया। जबकि, कुल 70 शिक्षकों जो इन विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं, में से 14 शिक्षकों को व्यवस्थित यादृच्छिक नमूनाकरण के द्वारा अध्ययन के लिए चुना गया।

शोध उपकरण: इस अध्ययन के लिए आंकड़ों को एकत्र करने के लिए शोधकर्ताओं ने अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची और अवलोकन अनुसूची का उपयोग किया। इसके अलावा उन्होंने छात्रों की उपस्थिति, संचयी और वास्तविक रिकॉर्ड जैसे द्वितीयक स्रोतों से आंकड़ों को एकत्र किया।

शोधकर्ताओं ने व्यक्तिगत रूप से उचित अनुमति और सहमति लेने के बाद स्कूल के प्रधानाचार्य, संबंधित शिक्षकों और निम्नप्रदर्शन करने वाले छात्रों से संपर्क करके प्रदत्तों को एकत्र किया।

5. शोध परिणाम

शोधकर्ताओं द्वारा आंकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर शोध परिणाम निम्नलिखित हैं:

- इस शोध में यह पाया गया कि सरकारी स्कूलों में अधिकांश छात्र पिछड़े वर्गों से थे। उनमें से ज्यादातर निम्नआय वाले परिवारों से थे और उनके अधिकांश माता-पिता मजदूर या दिहाड़ी मजदूर थे। शिक्षकों ने माना है कि परिवारों की आय बहुत निम्न होने के कारण इन बच्चों के पास शैक्षिक संसाधनों की कमी होती है।
- अधिकतर शिक्षकों का मानना है निम्न प्रदर्शन करने वाले ज्यादातर छात्र अपने अभिभावकों के साथ मजदूरी और घर का काम करते हैं। इस कारण इन बच्चों को पढ़ाई के लिए कम समय मिलता है।
- शिक्षकों का मानना है कि अधिकतर अभिभावकों में अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी होती है। उनके नकारात्मक रवैया और बच्चों की शिक्षा में समर्थन की कमी सहित संबंधित चिंताएँ बच्चों की शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण हैं।
- शिक्षकों ने पारिवारिक वातावरण को भी निम्न प्रदर्शन का एक और कारण माना है। उन्होंने बताया कि निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों के अधिकांश परिवार के सदस्य नशीले पदार्थों और शराब का सेवन करते हैं। निम्न प्रदर्शन करने वाले अधिकतर छात्रों ने भी इस बात को स्वीकार किया और कुछ ने बताया कि उनके माता-पिता आपस में लड़ाई करते रहते हैं। शिक्षकों ने माना कि घर में इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों की पढ़ाई पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।
- शोधकर्ताओं ने ये पाया कि शिक्षकों और निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों के बीच अच्छे संबंध नहीं थे। उनमें आपस में समन्वय की कमी थी। लेकिन यह भी देखा गया कि कुछ छात्र जो शिक्षकों और साथियों के साथ मिलकर काम कर रहे थे, उनका प्रदर्शन अपने निम्नप्रदर्शन करने वाले साथियों की तुलना में बेहतर पाया गया।
- निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्र अपना अधिकतम समय गैर शैक्षणिक गतिविधियों में बिताते थे। कक्षा में निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों की भागीदारी शैक्षिक गतिविधियों (शिक्षण सीखने की प्रक्रिया) में भी निम्न पाई गई। वे पढ़ाई के अलावा कक्षा में अपने दोस्तों के साथ बातचीत करते रहते थे। शोधकर्ताओं ने ये पाया कि निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों की कक्षा में एकाग्रता की कमी थी।
- शिक्षकों ने माना कि निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले छात्रों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए तथा उनके सीखने के अंतराल को जानने के लिए विद्यालय में बहुत कम मौखिक परीक्षाएँ और साप्ताहिक/मासिक परीक्षण आयोजित किए जाते हैं। कक्षा अवलोकन में भी ये देखा गया कि अधिकांश शिक्षक विद्यार्थियों के रचनात्मक मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे थे।
- सभी छात्र और अधिकतर शिक्षक मानते हैं कि निम्न प्रदर्शन करने वाले अधिकांश छात्रों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाए जाने पर विषयवस्तु आसानी से समझ में आ जाती है। अधिकांश शिक्षकों के शिक्षण का माध्यम हिंदी और अवधी था। यह भी देखा गया कि कुछ विद्यालयों

में शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में थीं। अधिकांश शिक्षक इस बात पर सहमत थे कि शिक्षण की भाषा शिक्षार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है। अधिकांश शिक्षकों का मानना है कि निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों को शिक्षण के माध्यम के रूप में अंग्रेजी में अवधारणाओं को समझने में कठिनाई होती है।

- शोधकर्ताओं ने पाया कि ज्यादातर छात्र अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम नहीं थे, इसलिए वे शिक्षकों द्वारा कारवायी गई गतिविधियों को अपने दैनिक जीवन और घर के माहौल से जोड़कर समझने में कठिनाई महसूस कर रहे थे।
- निम्न प्रदर्शन करने वाले अधिकांश छात्र स्कूल में अनियमित थे। अधिकांश शिक्षकों की प्रदर्शन के बारे में एक ही धारणा है, सीखने की कमी लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के कारण है। निम्न प्रदर्शन करने वाले अधिकांश छात्र ने होमवर्क पूरा नहीं करते थे। अधिकांश बच्चों ने स्वीकार किया कि उनके घरों में पढ़ाई का अच्छा माहौल नहीं होता है और उन्हें होमवर्क करने में किसी की सहायता नहीं मिलती है।
- शिक्षकों ने माना है कि अधिकांश स्कूलों में तकनीकी उपकरण और उनकी कनेक्टिविटी की उपलब्धता नहीं है, इसलिए वे ज्यादातर पढ़ाने में तकनीक का अधिक प्रयोग नहीं कर पाते हैं। यह भी पाया गया कि अधिकांश छात्रों के माता-पिता के पास तकनीकी उपकरणों का अभाव है।
- अधिकांश शिक्षकों ने निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों के अभिभावकों की शिक्षा से संबंधित अपनी चिंताएँ व्यक्त कीं। उनका मानना है कि अधिकांश अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी है, स्कूल में शिक्षकों से कम बातचीत होती है, अभिभावक-शिक्षक बैठक में शामिल नहीं होते हैं, अपने बच्चों से होमवर्क नहीं करवाते हैं, इस बात की परवाह नहीं करते कि बच्चे स्कूल जा रहे हैं या नहीं।
- अधिकतर अभिभावकों का यह भी मानना है कि संयुक्त परिवार के छात्र एकल परिवार के छात्रों की तुलना में तुलनात्मक रूप से उच्च प्रदर्शन करते हैं, क्योंकि एकल परिवार के छात्रों के पास एक्सपोजर, मार्गदर्शन और परामर्श की कमी होती है।

6. शैक्षिक निहितार्थ और अनुशंसाएँ

अध्ययन के परिणामों के आधार पर मिडिल स्टेज में निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले छात्रों और उनके शिक्षकों के लिए शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार हैं:

- निष्कर्षों से यह स्पष्ट है कि निम्न प्रदर्शन करने वाले ज्यादातर छात्र कम आय वाले परिवारों में से हैं और उनके अधिकांश अभिभावक दिहाड़ीदार मजदूर हैं। परिवार की आय कम होने की वजह से छात्रों को घर के कामों को भी करना पड़ता है जिससे छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। पारिवारिक चुनौतियों के निपटान के लिए सरकार और प्रशासन को इन परिवारों के बच्चों के लिए छात्रवृत्ति और अभिभावकों को कोई वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए ताकि वे अपने बच्चों को बिना किसी रुकावट के शिक्षित कर सकें।
- माता-पिता की आर्थिक और शैक्षिक स्थिति कमजोर है और शिक्षा के बारे में भी जागरूकता की कमी है। अधिकांश माता-पिता का शिक्षा के प्रति रवैया नकारात्मक और उदासीन पाया गया, इसलिए छात्रों को पढ़ाई में सहयोग नहीं कर पाते हैं और शिक्षा को कम महत्व देते हैं। इसके कारण छात्र अन्य कामों में व्यस्त हो जाते हैं जिसमें घरेलू कार्य भी शामिल है, घर पर पढ़ाई न करने के कारण भी अधिकतर छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन निम्न होता है। यह सुझाव दिया जाता है कि सरकार को माता-पिता और छात्रों को मार्गदर्शन और परामर्श कार्यक्रम प्रदान करना चाहिए। इसके अलावा, सरकार और स्कूल प्रशासन को उन छात्रों और उनके अभिभावकों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रभावी जागरूकता अभियान भी शुरू करना चाहिए।
- एक निष्कर्ष से पता चला है कि कम प्रदर्शन करने वाले अधिकांश छात्रों के परिवार के सदस्य नशीले पदार्थों और शराब का सेवन करते हैं। उनमें से अधिकांश के माता-पिता अपने परिवार के सदस्यों के साथ लड़ाई भी करते हैं। आम तौर पर वे मौखिक और शारीरिक दुर्व्यवहार में लिप्त रहते हैं। इसलिए, यह अनुशंसा की जाती है कि माता-पिता को इन दवाओं का सेवन करने और परिवार के साथ हिंसा करने से बचना चाहिए। और साथ ही सरकार को ऐसे कृत्यों को रोकने और निगरानी के लिए सख्त नियम और कानून बनाने चाहिए।
- निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों को स्थानीय भाषा में पढ़ने पर तथ्य आसानी से समझ में आ जाते हैं। छात्रों के प्रदर्शन में शिक्षण का माध्यम महत्वपूर्ण भी भूमिका निभाता है। इसलिए, कक्षा में शिक्षण का माध्यम छात्रों की स्थानीय बोली या मातृभाषा से अधिक जुड़ा होना चाहिए।
- एक निष्कर्ष यह दर्शाता है कि निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्र अपना अधिकतम समय गैर शैक्षणिक गतिविधियों में बिताते हैं। कक्षा में कम प्रदर्शन करने वाले छात्रों की शैक्षिक गतिविधियों (शिक्षण सीखने की प्रक्रिया) में भी कम भागीदारी पाई गई। वे पढ़ाई के अलावा कक्षा में अपने दोस्तों के साथ बातचीत करते रहते हैं। कक्षा में कम प्रदर्शन करने वाले छात्रों की एकाग्रता में भी कमी पायी गयी है। इसलिए यह अनुशंसा की जाती है कि कक्षा में सभी छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण पद्धति समावेशी होनी चाहिए। छात्रों की शैक्षिक जरूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम नियोजन और शिक्षण पद्धतियाँ को विकसित करना चाहिए। शिक्षकों को अपनी

शिक्षण पद्धति को चिंतनशील बनाने के प्रयास करने चाहिए और अपने सीखने के अभ्यास को बढ़ाने और कक्षा में समावेशी वातावरण बनाने के लिए क्रिया-अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

- निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों की सीखने की चुनौतियों का पता लगाने और शिक्षार्थियों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए स्कूलों में बहुत कम मौखिक और साप्ताहिक/मासिक परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। अधिकांश शिक्षक छात्रों के योगात्मक मूल्यांकन पर निर्भर रहते हैं। विद्यालयों को समावेशी मूल्यांकन की तकनीकियों को बढ़ावा देना चाहिए और कक्षा में प्रत्येक छात्र की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। साथ ही शिक्षकों को भी रचनात्मक मूल्यांकन को प्रोत्साहित करना चाहिए और मानकीकृत मूल्यांकन तकनीकों से बचना चाहिए।
- निष्कर्षों से यह स्पष्ट है कि निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले अधिकांश छात्र अपना गृहकार्य पूर्ण नहीं करते हैं। अधिकांश बच्चों ने स्वीकार किया कि उनके घरों में होम स्टडी सपोर्ट सिस्टम नहीं है। शोधकर्ता ने यह भी देखा कि उनमें से अधिकांश छात्र अपने अभिभावकों के साथ घर के कामों को करते हैं, जिस वजह से उन्हें अपना गृहकार्य पूरा करने का समय भी नहीं मिल पाता है। इसके आधार पर यह अनुशंसा की जाती है कि अभिभावकों को शिक्षा के अधिकार नीतियों पर जागरूक करने की आवश्यकता है, इस दिशा में कार्य करने वाली ऐजेंसियों को सक्रिय होने की आवश्यकता है। और साथ ही सरकार को निम्न प्रदर्शन करने वाले छात्रों के लिए उनके समुदाय में सामुदायिक ट्यूटर सुविधा प्रदान करनी चाहिए।
- यह पाया गया है कि निम्न अकादमिक प्रदर्शन करने वाले छात्र शिक्षण प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के एकीकरण के साथ बेहतर प्रदर्शन करते हैं। अधिकांश स्कूलों में तकनीकी उपकरण और उनकी कनेक्टिविटी की उपलब्धता नहीं है। प्रौद्योगिकी एकीकृत कक्षाएँ केवल ऑनलाइन या ऑफ़लाइन की तुलना में बेहतर हो सकती हैं। इसके अलावा, अधिकांश छात्रों के पास कोई तकनीकी उपकरण नहीं था और वे सोशल मीडिया का उपयोग नहीं कर रहे थे। इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि सरकार को सीखने के लिए समावेशी वातावरण बनाने के लिए आईसीटी उपकरण प्रदान करने चाहिए। शिक्षकों को प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए और प्रत्येक छात्र की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। अधिकांश स्कूलों में आईसीटी शिक्षकों की भी कमी है। इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि स्कूली व्यवस्था में इस कमी को पूरा करना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- निम्न प्रदर्शन करने वाले अधिकांश छात्र स्कूल में अनियमित रहते हैं। यह भी देखा गया कि लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के कारण छात्रों के सीखने में अंतराल हो जाता है। अधिकांश शिक्षकों की भी लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के कारण सीखने की कमी के बारे में यही धारणा थी। बच्चों के इस अधिगम न्यूनता को पूरा करने की विद्यालयों के पास कोई सार्थक और सटीक योजना नहीं होती है, अतः शिक्षकों को छात्रों की अनुपस्थिति के बारे में सोचना चाहिए और छात्रों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए कुछ सकारात्मक योजना पर काम करना आवश्यक है। ऐसे बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन को बेहतर करने के लिए अधिगम संवर्धन कार्यक्रम विद्यालयी स्तर पर विकसित किये जाने चाहिए और इन्हें गंभीरता से लागू किया जाना चाहिए।

7. निष्कर्ष

इस शोध से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सरकारी स्कूलों में निम्न आय वर्ग और पिछड़े समुदायों से आने वाले छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर कई बाहरी और आंतरिक कारक नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। इन छात्रों के परिवारों की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वे घर के कामों में शामिल होते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई पर असर पड़ता है। इसके अतिरिक्त, अभिभावकों की शिक्षा और शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी, पारिवारिक तनाव, और नशे की आदतें बच्चों के मानसिक और शैक्षिक विकास में रुकावट डालती हैं। निम्न अकादमिक प्रदर्शन के अन्य कारणों में कक्षा में ध्यान की कमी, पढ़ाई में रुचि का अभाव और शिक्षकों के साथ समन्वय की कमी भी सम्मिलित हैं। विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने से उन्हें कुछ हद तक लाभ हुआ पाया गया है। विद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की कमी और अभिभावकों की कम सक्रियता, होमवर्क की अनदेखी और स्कूल में उपस्थिति की परवाह न करना, छात्रों के शैक्षिक विकास को प्रभावित करते हैं। शोध में संयुक्त परिवारों की भूमिका बेहतर प्रदर्शन के लिए उपयोगी और सार्थक सिद्ध हुई है। शोध परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक प्रदर्शन को सुधारने के लिए न केवल विद्यालयों और शिक्षकों को सुधारने की आवश्यकता है, बल्कि छात्रों के घरों और समुदायों में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता और समर्थन बढ़ाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ-सूची

- अल-ज़ौबी, एस.एम., और यूनुस, एम.ए.बी. (2015). लो अकैडमिक अचीवमेंट: कॉज़स एण्ड रिजल्ट्स. थियरि एण्ड प्रैक्टिस इन लैङ्ग्वेज स्टडीस, 5(11), 2262.
- असर: अनुयल स्टेटस ऑफ एडुकेशन रिपोर्ट. जून 19, 2023 को <https://asercentre.org/> से प्राप्त किया।
- अहमद, एच., & वाइस, एस. (2012). द लो लैवल ऑफ अकैडमिक अचीवमेंट एमंग हाइ स्कूल स्टूडेंट्स फ्रॉम टीचर्स एण्ड स्टूडेंट्स पर्सपेक्टिवे. जर्नल: सुरा मन रा, 8(28), 1-38.

- अहमद, एस.जेड., & अब्दुल मुतालिब, ए. (2015). प्रेलिमिनरी स्टडी: एन इन्वैस्टिगेशन ऑन लर्निंग असिस्टेंस रिक्वाइरमेंट एमंग लो अचिवर्स इन प्राइमरी स्कूल. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्प्यूटर एप्लिकेशन्स, 114(2), 48-54A.
- एलड्रिडगे, एम. (2012). अकादमिक फ़ेल्युर एंड एजुकेशनल सपोर्ट मेथड्स. मोहम्मद वी यूनिवर्सिटी- रबात-मोरक्को
- कहुनज़िरे, ई., असिम्वे, एस.एम., और किर्यिंगी, एफ. (2023). पैरेंट्स रोल इन पुपिल्स अकैडमिक परफॉर्मेंस इन यूगाण्डा. इउरोपियन जर्नल ऑफ एडुकेशन एण्ड पेडागोगी, 4(2), 7-17.
- जबीन,एस., & खान, एम. ए. (2013). अ स्टडी ऑन क्रिएटिव थिंकिंग अबिलिटीस अंड सेल्फ कान्सैप्ट ऑफ हाइ अंड लो अचीवर्स. यूनिक जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 1(1), 001-011.
- डी. मीना और सिवाच,(2008). इम्पैक्ट ऑफ होम एनवायरनमेंट ऑन द स्कोलास्टिक अचीवमेंट ऑफ चिल्ड्रेन, कृषि विज्ञान केंद्र, उझा, पानीपत 132103, हरियाणा, इण्डिया. जे. हूम. इकोल.,23(1):75 77.
- माइकल, आई.ओ., और वुमी, ओ.ए. (2016) काजेज़ एंड रेमेडीज टू लो अकादमिक परफॉर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स इन पब्लिक सेकोण्डरी स्कूलस: अ स्टडी ऑफ इजेरो लोकल गवर्नमेंट एरिया ऑफ एकटी स्टेट. रिसर्च ऑन हुमनिटीज एंड सोशल साइंसेस 6, 15.
- तामिमी, ए. (2012). द वीकनेस इन द अकैडमिक परफॉर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स. बगदाद यूनिवर्सिटी, कॉलेज ऑफ एडुकेशन, एलबीएन रुश्द।
- तनिमा, एस. (2004). नन्दिता: कोरिलेट्स ऑफ अकादमिक अचीवमेंट, स्टडी हैबिट्स एंड स्टडी एटिट्यूड इन रीलेशन. साइको लिंगुया, 34(1).
- नारद, ए., और अब्दुल्ला, बी. (2016). अकैडमिक परफॉर्मेंस ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स: इंप्लुएंस ऑफ पैरेंटल इनकरेजमेंट एंड स्कूल इनवाइरोमेंट. रूपकथा जर्नल ऑन इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज इन हुमनिटीज़, 8(2), 12-19.
- नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एन.ए.एस.). जून 19, 2023 को <https://nas.education.gov.in/> से प्राप्त किया गया।
- प्रोग्राम एण्ड इनीसिएटिव्स (2022) | निपुण भारत (मिशन प्रेरणा) | ऑफिसियल वैंबसाइट ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ बेसिक एडुकेशन. प्राप्त किया जून 12, 2023 को [https://basiceducation.up.gov.in/en/page/nipun-bharat-\(mission-prerna\)](https://basiceducation.up.gov.in/en/page/nipun-bharat-(mission-prerna)) से प्राप्त किया।
- प्रोग्राम एण्ड इनीसिएटिव्स (2022), स्कूल चलो अभियान, ऑफिसियल वैंबसाइट ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ बेसिक एडुकेशन.(जून 12, 2023) को <https://basiceducation.up.gov.in/en/page/school-chalo-abhiyan> से प्राप्त किया।
- बर्ट्रांस, ए., और डिकहाउसर, ओ. (2009). हाइ-स्कूल स्टूडेंट्स नीड फॉर कोगीनीशन, सेल्फ-कंट्रोल कैपासिटी एण्ड स्कूल अचीवमेंट: टेस्टिंग अ मीडियशन हाइपोथेसिस. लर्निंग एण्ड इंडिविदुयल डिफरेंसेस, 19(1), 135-138.
- बाला, आर. (2014). वैल्यूस एण्ड एडजस्टमेंट प्रॉब्लेम्स ऑफ हाइ अचीवर्स एण्ड लो अचीवर्स. इंटर.जे.एडुक.एडीएम., 4, 113-118.
- मिड डे मील अथॉरिटी, उत्तर प्रदेश जून 19, 2023 को <https://www.upmdm.org/> से प्राप्त किया गया।
19. मुल्यादी, एच., वासपाडा, आई., और केनकाना, एस. (2023). सेल्फ-एफ़िकेसी मेडिएशन इन्फ्लुएंस ऑफ द फ़ैमिली इनवायरनमेंट एण्ड मेटाकोग्निटिव्स ऑन स्टूडेंट अकैडमिक परफॉर्मेंस बुडापेस्ट इंटरनेशनल रिसर्च एंड क्रिटिक इंस्टिट्यूट -जर्नल (बीआईआरसीआई -जर्नल), 6(2), 961-974.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मन्त्रालय. जून 13, 2023 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf से प्राप्त किया गया।
- समग्र शिक्षा. (2024), <https://samagra.education.gov.in/> से प्राप्त किया
- सर्व शिक्षा अभियान | भारत सरकार, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद. ए.आई.सी.टी.ई. जून 19, 2023 को <https://www.aicte-india.org/reports/overview/Sarva-Shiksha-Abhiyan> से प्राप्त किया गया।